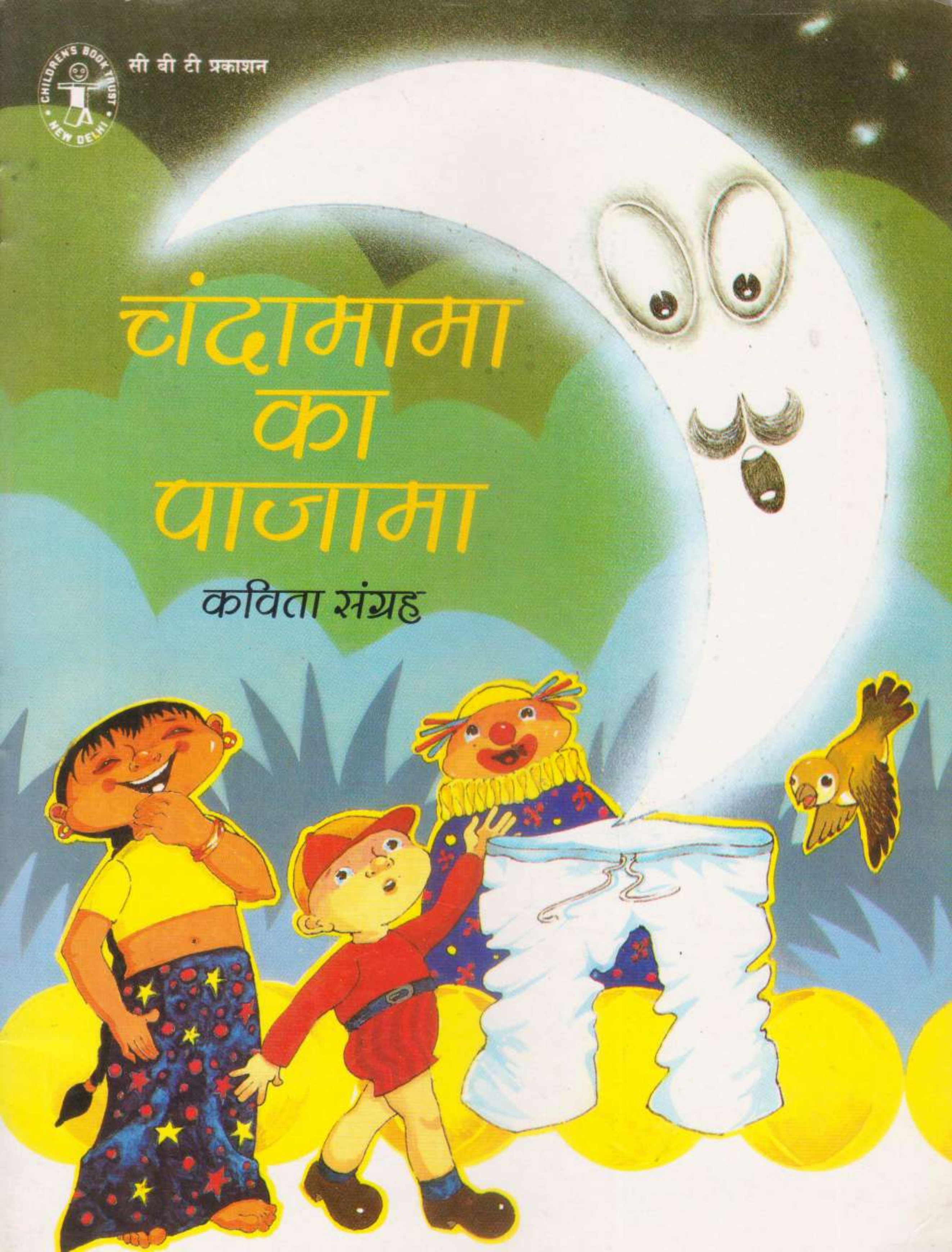
सी बी टी प्रकाशन

चंदामामा का पाजामा

कविता संग्रह



चंदामामा का पाजामा

कविता संग्रह



चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

इस चित्र-पुस्तक में सम्मिलित अधिकतर कविताएँ चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित बाल-साहित्य लेखक प्रतियोगिता में पुरस्कृत रचनाएँ हैं।

CHANDA MAMA KA PAJAMA

चित्रांकन: अजंता गुहाठाकुरता

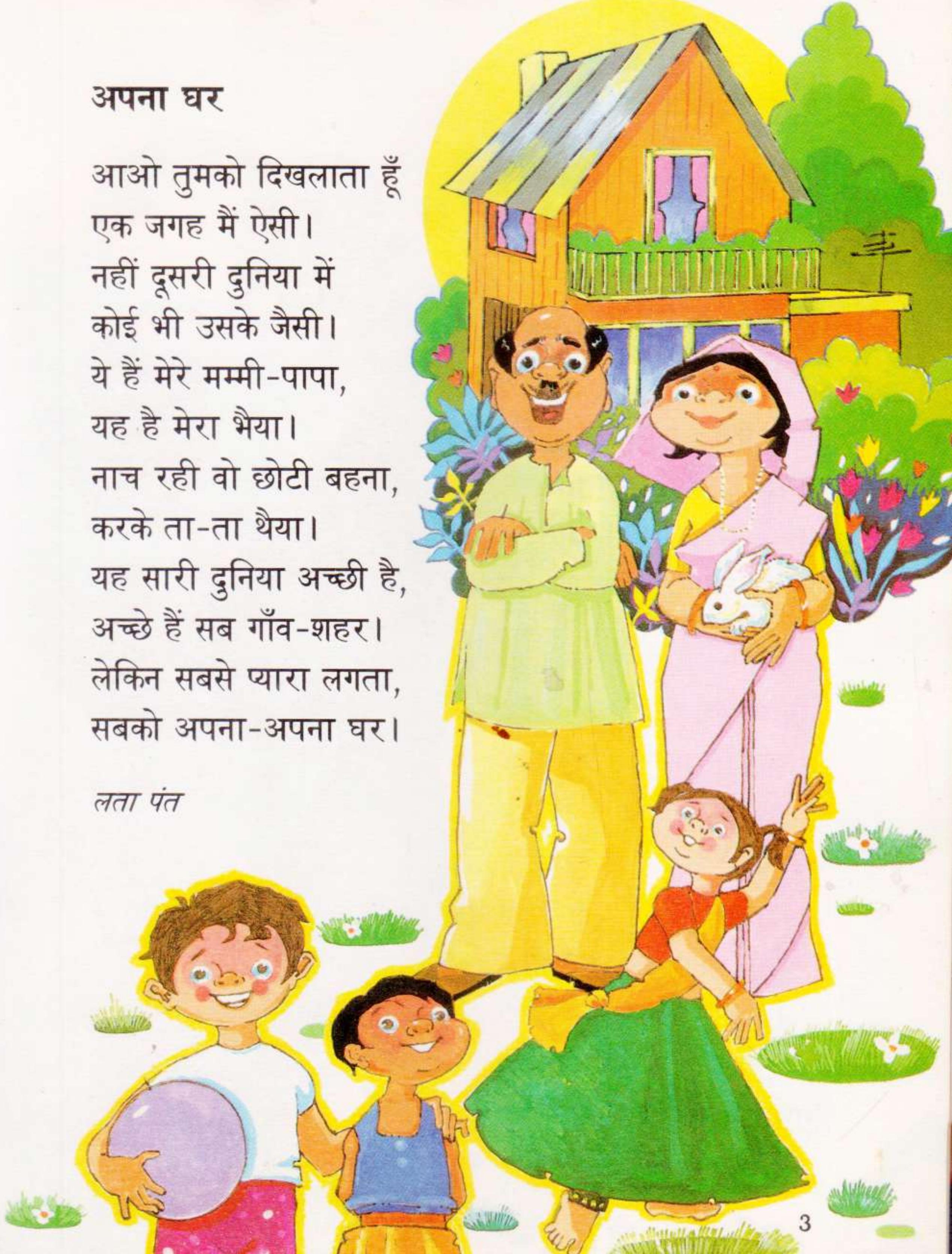
पुनर्मुद्रण 1999, 2000, 2001, 2002.

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित एवं न्यास के इंद्रप्रस्थ प्रेस में मुद्रित। दूरभाष : 3316970–74 फैक्स : 011-3721090
ई-मेल : cbtnd@vsnl.com वेबसाइट : www.childrensbooktrust.com

अपना घर

आओ तुमको दिखलाता हूँ
एक जगह मैं ऐसी।
नहीं दूसरी दुनिया में
कोई भी उसके जैसी।
ये हैं मेरे मम्मी-पापा,
यह है मेरा भैया।
नाच रही वो छोटी बहना,
करके ता-ता थैया।
यह सारी दुनिया अच्छी है,
अच्छे हैं सब गाँव-शहर।
लेकिन सबसे प्यारा लगता,
सबको अपना-अपना घर।

लता पंत

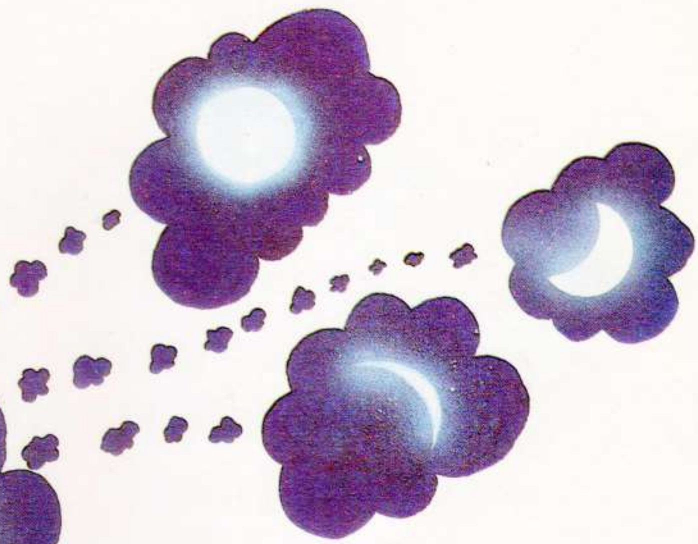


चतुर कौआ

कौआ एक प्यास का मारा,
घूम रहा दर-दर बेचारा।
तभी घड़ा नजर इक आया,
पानी उसमें नाम को पाया।
तभी सूझी उसे इक तरकीब,
लिए कंकड़ जितने थे करीब।
कंकड़ घड़े में डालता जाता,
पानी ऊपर चढ़ता आता।
कौआ अपनी प्यास बुझाकर,
नीड़ में अपने पहुँचा उड़कर।

रेनू चौहान







चंदामामा का पाजामा

धरती पर आए चंदामामा,
सबको देख शरमाए मामा।
दर्जी के पास पहुँचे मामा,
बोले सिल दो एक पाजामा।
नाप लेकर सिला पाजामा,
पर पहन चकराए मामा।
पाजामा नहीं पूरा आया,
दर्जी का भी सिर चकराया।
तभी बात समझ में आई,
दर्जी ने फिर यूँ समझाई।
पाजामा कैसे पूरा आए,
हर दिन नाप बदलता जाए!

रेनू चौहान



चिट्ठी

पापा! मैं चिट्ठी लिखूँगी,
अम्मा को दिल्ली लिखूँगी।
समय नहीं मम्मी को मिलता, मुन्ना बस सारा दिन लड़ता।
चिट्ठी मिलते ही आ जाना, नहीं आपके बिन जी लगता।
अच्छी लगती नहीं कहानी, दादाजी करते मनमानी।
हम जब कहते बात खेत की, वे तो सुनते हैं खलिहानी।
पापा! मैं चिट्ठी लिखूँगी,
अम्मा को दिल्ली लिखूँगी।

सुरेश अनोखा

मैं हूँ रेल

मैं हूँ रेल, मैं हूँ रेल, खाती कोयला, बिजली, तेल।
दूर-दूर तक जाती हूँ, मंजिल तक पहुँचाती हूँ,
मन बहलाती बच्चों का, काम बड़ों के आती हूँ,
इसका उससे, उसका इससे रोज कराती रहती मेल।
जब दिखती है झंडी लाल, रुक जाती है मेरी चाल,
दिखती झंडी हरी मुझे, मैं चल देती हूँ तत्काल,
मैं हूँ रेल, मैं हूँ रेल, खाती कोयला, बिजली, तेल।

कमलेश द्विवेदी



साहसी पेड़

बड़े जोर से अंधड़ आया,
उसने भारी पेड़ गिराया।
सभी जड़ें धरती के बाहर,
किंतु एक धरती के अंदर।
पेड़ न रहने पाया भूखा,
पेड़ न रहने पाया सूखा।
हरा-भरा वह रहा निरंतर,
उस इकलौती जड़ के बल पर।

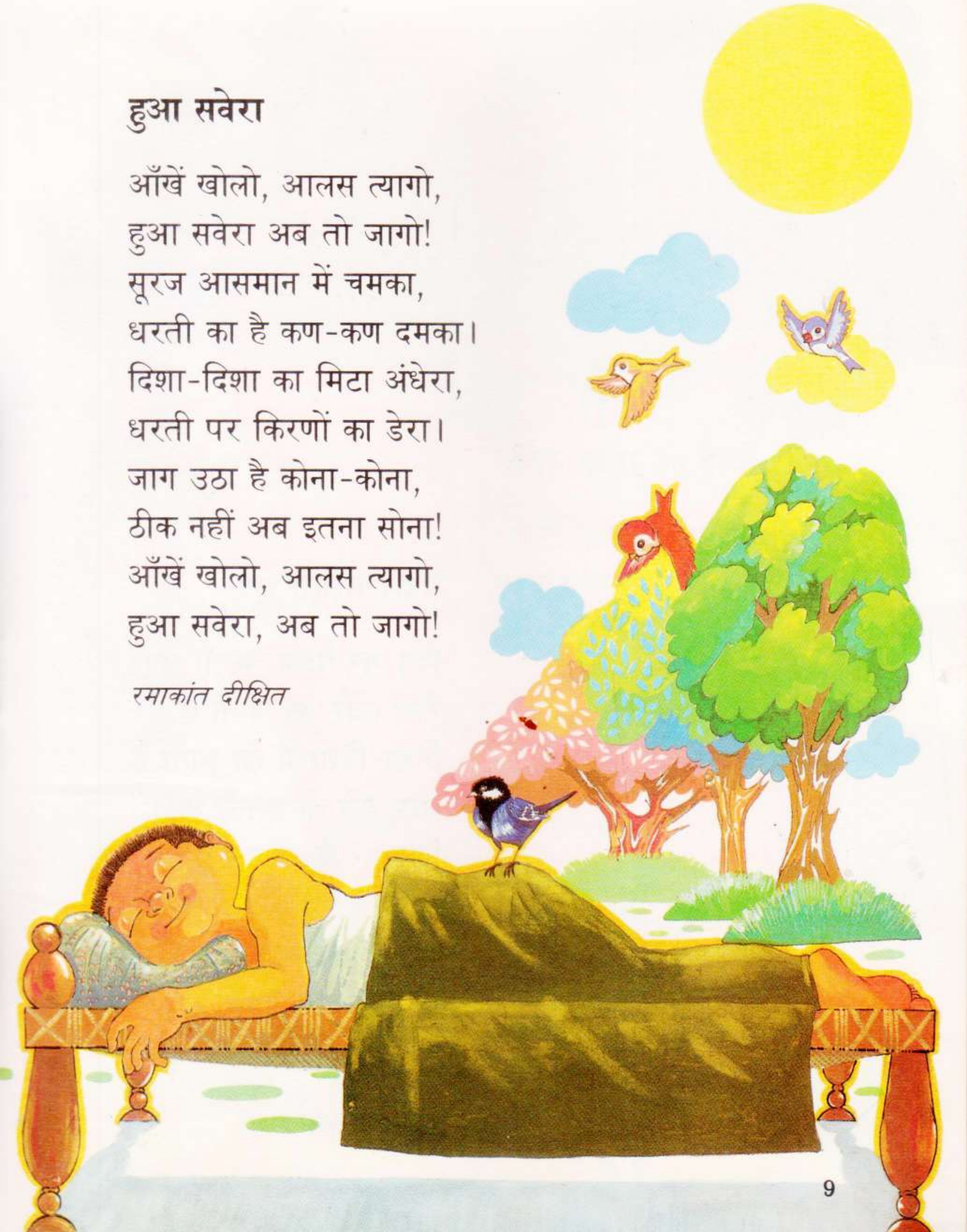
राजा चौरसिया



हुआ सवेरा

आँखें खोलो, आलस त्यागो,
हुआ सवेरा अब तो जागो!
सूरज आसमान में चमका,
धरती का है कण-कण दमका।
दिशा-दिशा का मिटा अंधेरा,
धरती पर किरणों का डेरा।
जाग उठा है कोना-कोना,
ठीक नहीं अब इतना सोना!
आँखें खोलो, आलस त्यागो,
हुआ सवेरा, अब तो जागो!

रमाकांत दीक्षित

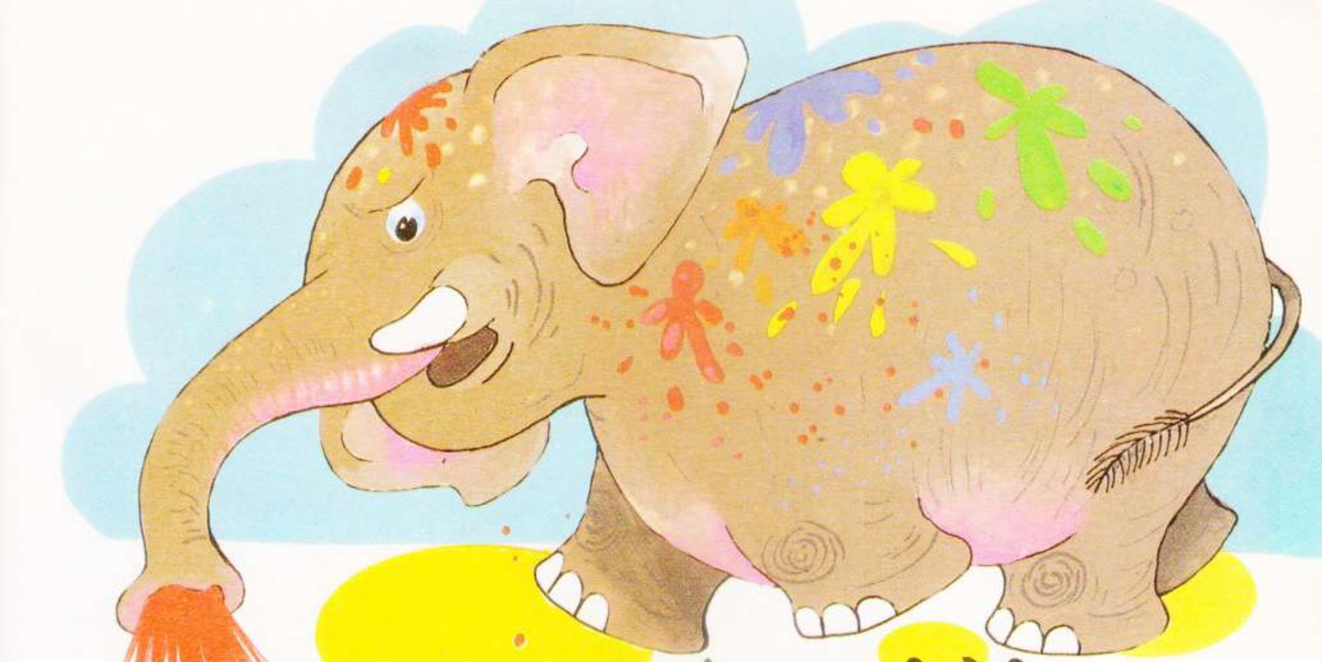




पैदल चलती धूप

दिन भर पैदल चलती धूप।
रोज सवेरे आ जाती है,
दिशा-दिशा में छा जाती है,
शाम ढले तो ढलती धूप।
दिन भर पैदल चलती धूप।
जाड़ों में यह मन को भाती,
थर-थर जाड़ा दूर भगाती,
गरमी में पर जलती धूप।
दिन भर पैदल चलती धूप।

रमाकांत दीक्षित



बंदर मामा की होली



होली के मौके पर भैया
खूब मचा हुड़दंग।
पी रखी थी बंदरजी ने
एक बाल्टी भंग।
उसी झोंक में कर बैठे वे
तभी रंग में भंग,
भारी-भरकम हाथीजी पर,
डाल दिया झट रंग।
नहीं तनिक कम हाथीजी भी,
अजब-निराले ढंग।
भरकर सूँड़ लबालब फिर तो,
लगे डालने रंग।

रमेशचंद्र पंत

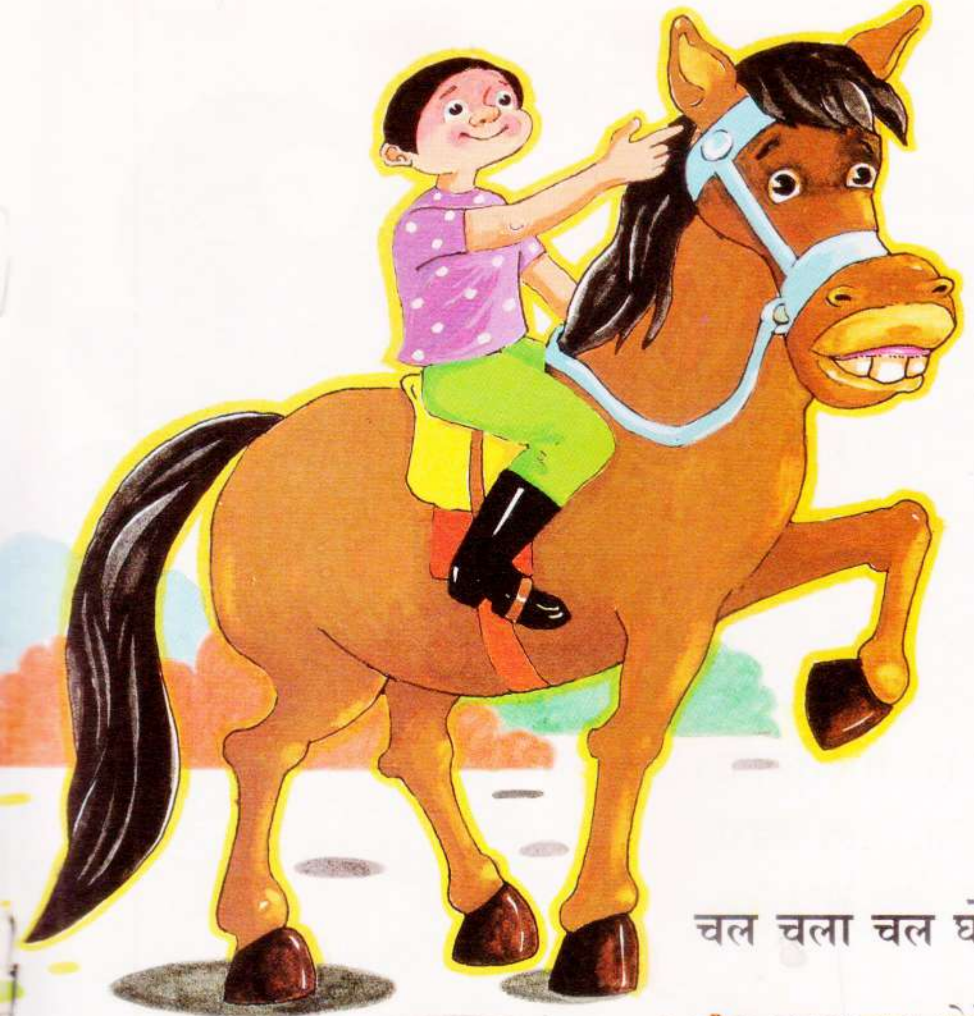


उपवन

क्यारी-क्यारी दमक रहे हैं,
फूल गगन के तारों से।
हरी साड़ी पर टँके हुए
सलमे और सितारों से।
फूले गेंदा, नरगिस, बेला,
अपनी धुन में मतवाले।
जूही, चंपा और चमेली,
डाल-डाल झूला डाले।

रमाकांत दीक्षित





चल चला चल घोड़े मेरे

चल चला चल घोड़े मेरे,
दन-दना-दन कर दे फेरे।
टप-टपा-टप करता चल तू,
फट-फटा-फट सैर करा तू।
बड़े-बड़े अरमान हैं मेरे,
मधुर सपने मुझको तो टेरें।
हवा जैसा बढ़ता चल तू,
हिम्मत से बस चलता चल तू!

सरला टंडन



छोटी मछली



छोटी-सी सुंदर इक मछली,
अम्मा संग सैर को निकली।
कभी आगे, कभी पीछे चली,
रास्ते में रह गई अकेली।
चारों ओर अंधेरा छाया,
देख मगर को मन घबराया।
इतने में इक जुगनू आया,
छोटी ने किस्सा बतलाया।
जुगनू बोला, "मत घबरा,
मेरे पीछे-पीछे आ।"



रेनू चौहान





चिड़िया रानी

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी,
हमें सुनाओ एक कहानी।
क्या तुम दिन भर करती हो,
कहाँ-कहाँ तुम उड़ती हो?
जब तुम जातीं दूर आकाश,
क्या जातीं चंदा के पास!
सागर तट जब तुम जाती हो,
किससे मिलकर तुम आती हो?
दूर देश भी क्या तुम जातीं,
लंदन-पेरिस घूम के आतीं?
काश जो होते मेरे पंख,
उड़ती मैं चिड़िया के संग!

गिरिजा रानी अस्थाना



प्यारे फूल

लाल, गुलाबी, नीले, पीले,
रंग-बिरंगे प्यारे फूल।
घर बाहर और बाग-बगीचे,
खिले हुए हैं देखो फूल।
कौन इन्हें देता है खुशबू,
रंग इनको दे जाता कौन!
कौन बनाता इनकी पत्ती,
मधु भर जाता इनमें कौन!

रश्मि स्वरूप जौहरी



गुनगुनी धूप

प्यारी धूप, गुनगुनी धूप,
कितनी अच्छी लगती धूप।
सूरज दादा के रथ पर चढ़,
धरती बीच उतरती धूप।
सर्दी से राहत दिलवाती,
सबके तन-मन को सहलाती।
जाड़े के मौसम में सबके,
मन को है खुश करती धूप।

दीपिका मालवीय

अंगों का महत्त्व

कान किसलिए होते हैं दो?
बुरा-भला जो भी हो सुन लो।
आँखें किसलिए होती हैं दो?
ऊँच-नीच सब कुछ तुम देखो।
होता है मस्तिष्क एक क्यों?
होकर नित एकाग्र तुम सोचो।
एक जीभ क्यों होती बोलो?
केवल मधुर, न कड़वा बोलो।
क्यों होते दो हाथ बताओ?
रात-दिवस श्रम करते जाओ।
और पैर दो क्यों सोचो तो?
फूलों पर काँटों पर चल लो।

घमंडीलाल अग्रवाल







खिलौने

हरे, लाल और नीले, पीले,
सब रंगों में रंगे खिलौने।
हाथी, घोड़ा, शेर और भालू,
हिरन, कबूतर, मोर और कालू।
मोटर, रेल, जहाज, सिपाही,
नेता दिखाए तानाशाही।
जोकर खूब बजाता भोंपू,
उसे देख चिल्लाता गोपू।
चाबी का कुत्ता गुर्राता,
छोटू बंदर कूद लगाता।
प्यारे-प्यारे और सलोने,
बच्चों के रंगीन खिलौने।

डॉ. देशबंधु शाहजहाँपुरी

पेन दिला दो

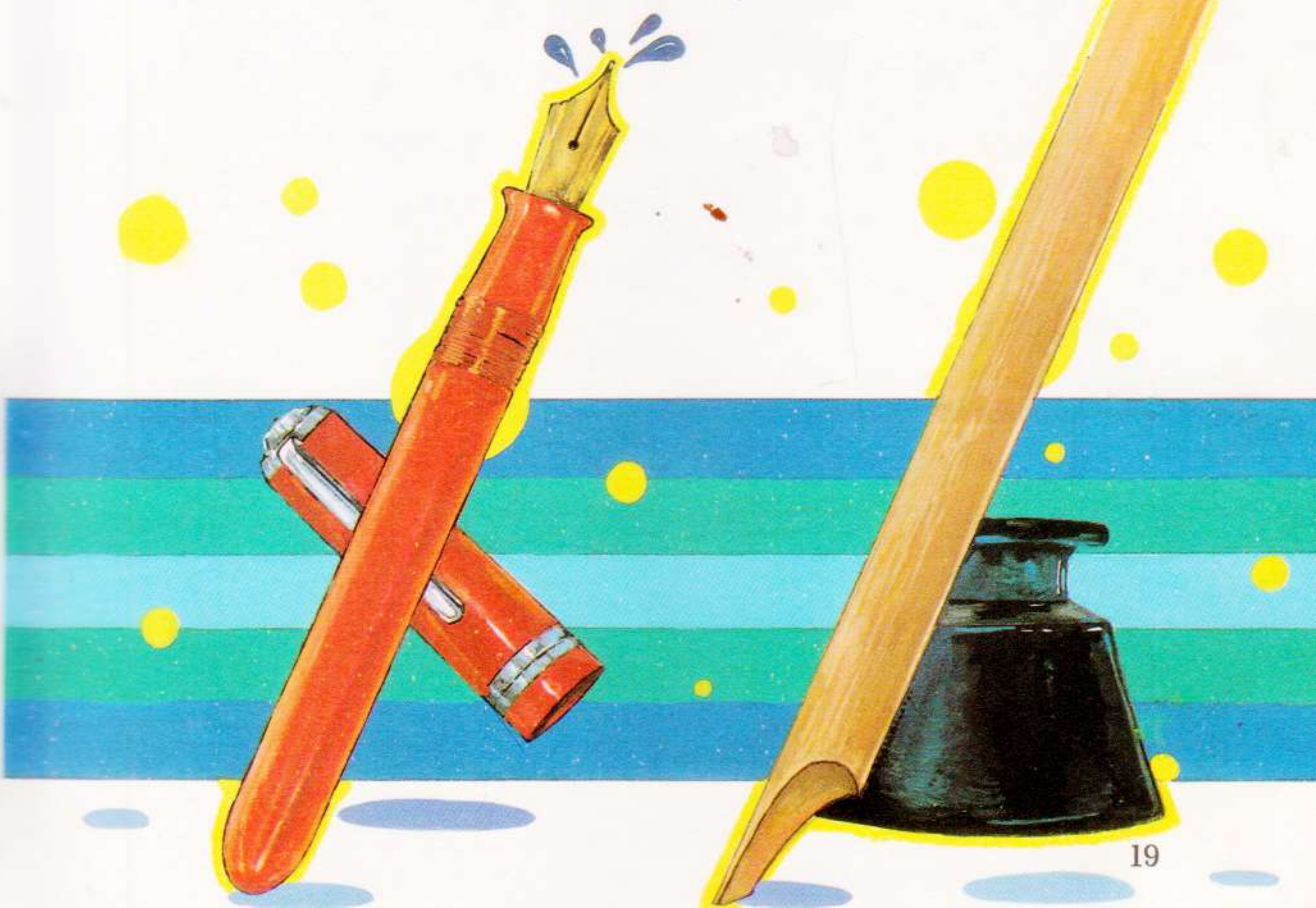
मम्मी! मम्मी! पेन दिला दो।
अच्छी मम्मी! पेन दिला दो।
नहीं चाहिए हमको खाना,
नहीं हमें पढ़ने को जाना।
आप हमारा नाम कटा दो,
या फिर हमको पेन दिला दो।

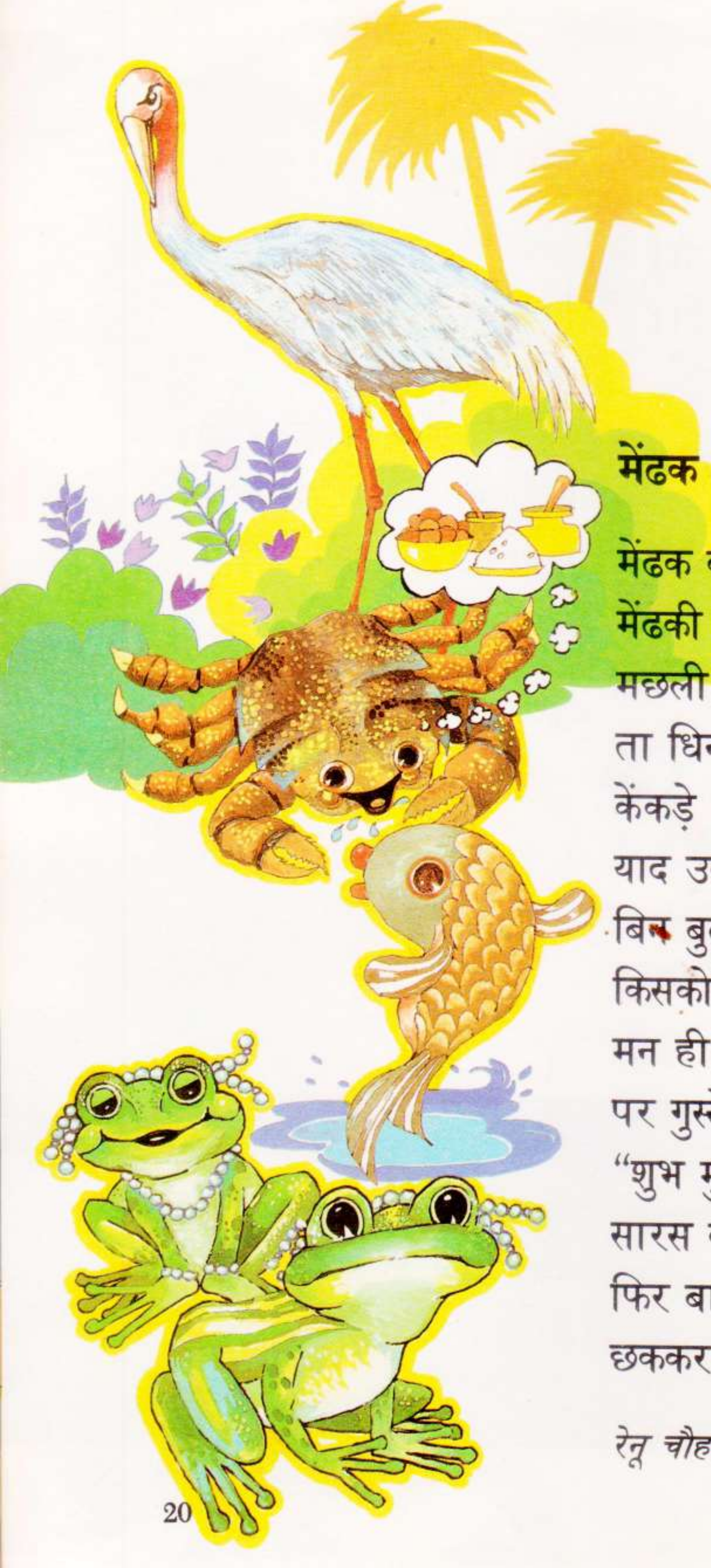
सुरेश अनोखा

कलम हमारी

कितनी प्यारी कलम हमारी,
इससे निकली विद्या सारी।
देख इसे होती हैरानी,
लिखती कविता और कहानी।
अपना तो औजार यही है,
अपनी यही संपदा सारी।
कितनी प्यारी कलम हमारी।

बाबूलाल शर्मा प्रेम

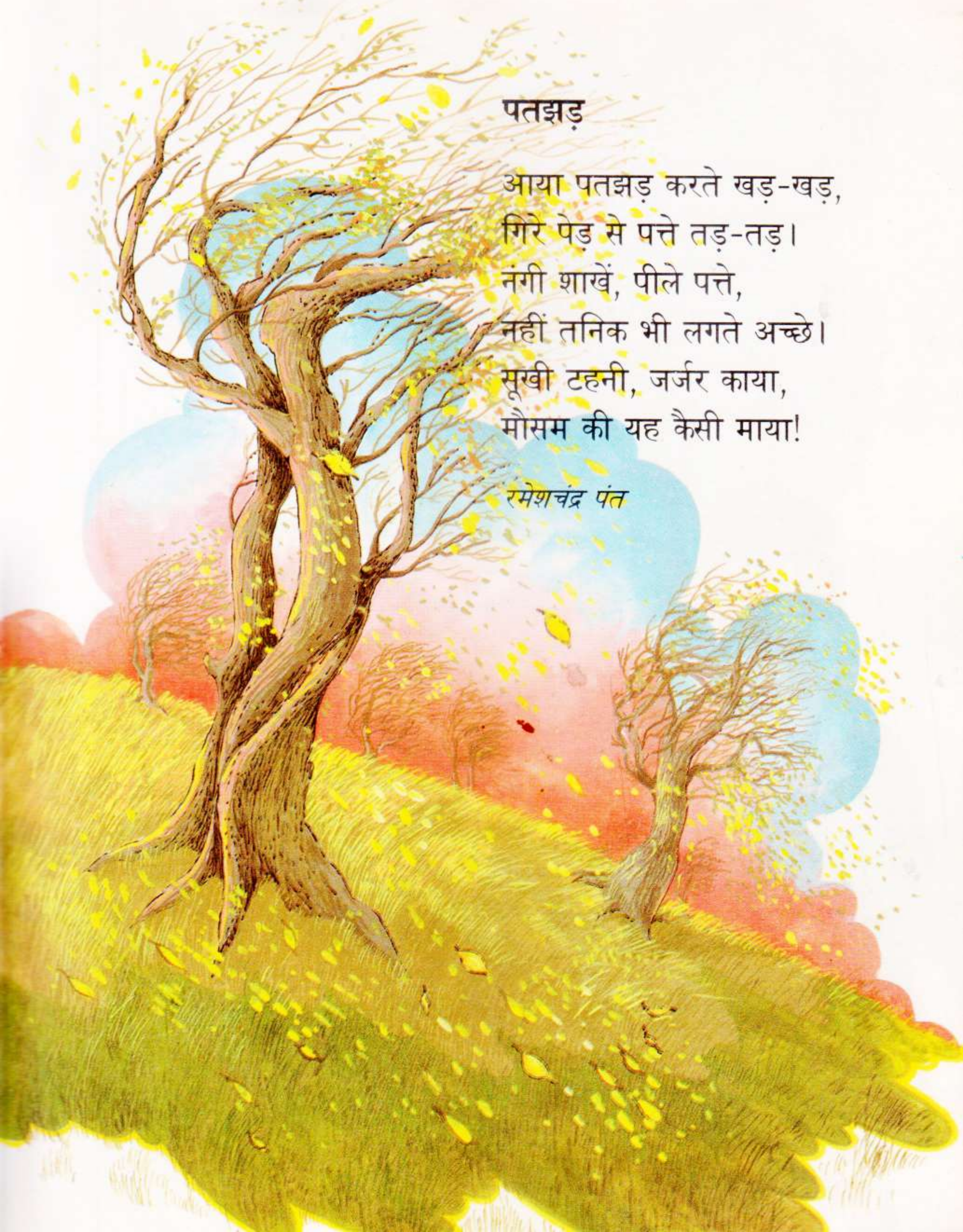




मेंढक की बारात

मेंढक की बारात चली,
मेंढकी भी साथ चली।
मछली बोली मैं भी आऊँ,
ता धिन-ता धिन नाच दिखाऊँ।
केंकड़े ने लार टपकाई,
याद उसे जब दावत आई।
बिन बुलाए सारस जी पहुँचे,
किसको खाऊँ मन में सोचें।
मन ही मन मेंढक घबराया,
पर गुस्से से यूँ टर्राया,
"शुभ मुहूर्त फिर से दिखवाओ,
सारस को तुम मार भगाओ।
फिर बारात में आ जाओ,
छककर दावत खा जाओ।"

रेनू चौहान



पतझड़

आया पतझड़ करते खड़-खड़,
गिरे पेड़ से पत्ते तड़-तड़।
नंगी शाखें, पीले पत्ते,
नहीं तनिक भी लगते अच्छे।
सूखी टहनी, जर्जर काया,
मौसम की यह कैसी माया!

रमेशचंद्र पंत

कठपुतली

जब-जब आती है कठपुतली,
नाच दिखाती है कठपुतली।
हाथ हिलाकर, मुँह मटकाकर,
दिल बहलाती है कठपुतली।
रंग जमाती, धूम मचाती,
तरह-तरह के खेल दिखाती।
बच्चे-बूढ़े या जवान हों,
सबको भाती है कठपुतली।

बाबूलाल शर्मा प्रेम







ईद का चाँद

आहा! देखो निकला चाँद,
उजला-उजला प्यारा चाँद!
कल तो होगा ईद का दिन,
खुशियाँ लेकर आया चाँद!
खुरमा, काजू-किशमिश वाली
मीठी खीर लाया चाँद!
चम-चम कपड़े, जगमग टोपी,
ईदी लेकर आया चाँद!

बानो सरताज काजी

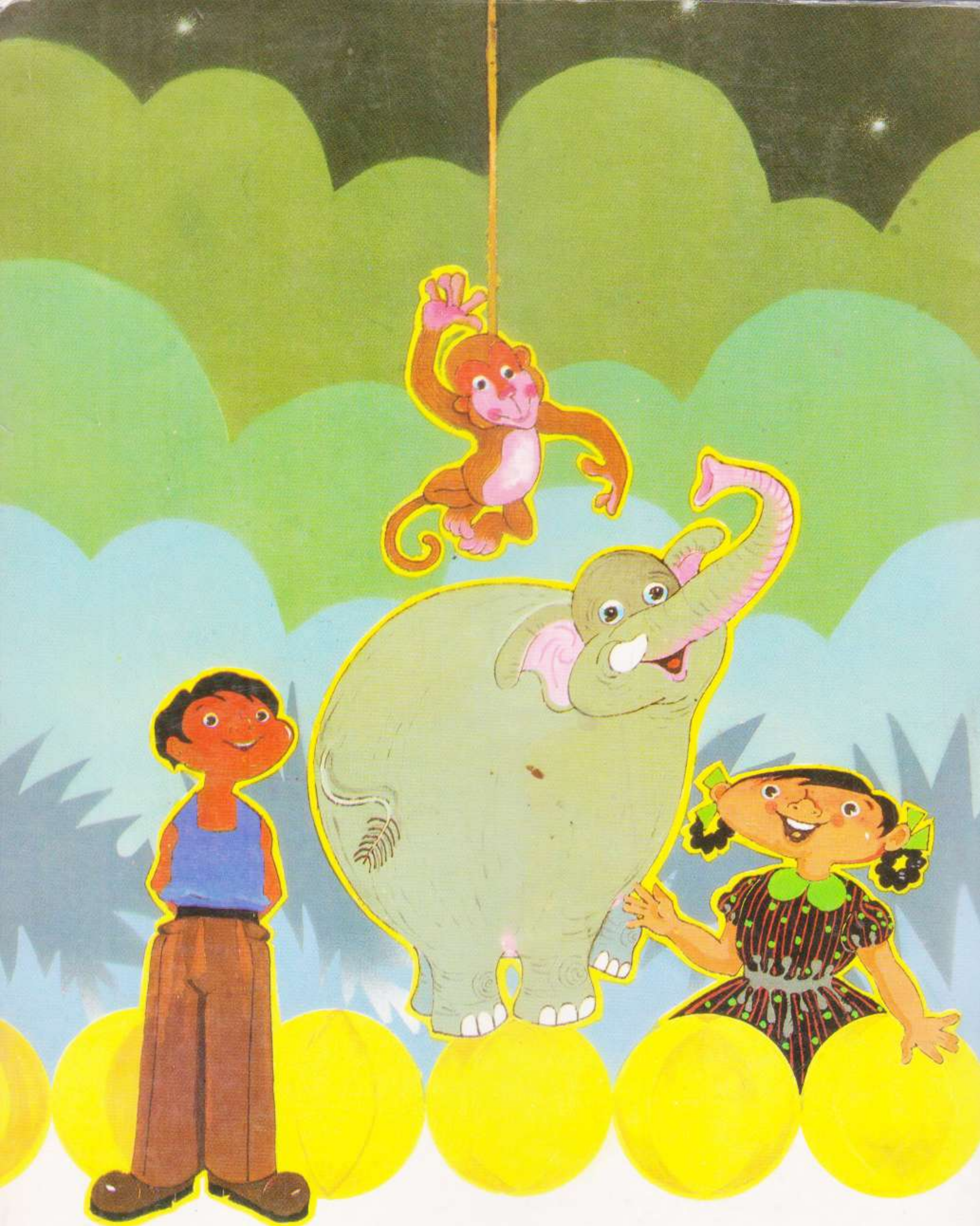


मौसम कितने

मुन्नी बोलो मौसम कितने?
घर में हम सब जन हैं जितने!
दादाजी यों खुश-खुश रहते,
वसंत में जैसे गुल हैं खिलते।
पापा कुछ हैं रूखे-फीके,
ग्रीष्म जैसे तीखे-तीखे।
वर्षा बरसे थम-थम, जम-जम;
मुन्नी नाचे छम-छम, छम-छम।
शरद् ऋतु-सी ये हैं मम्मी,
थोड़ी खट्टी, थोड़ी मीठी।
हेमंत मेरा नाम भी है,
उस जैसा ही काम भी है।
शिशिर न भाए दादीजी को,
बहुत सताए दादीजी को।

बानो सरताज काजी





Rs. 17.00 H 268

ISBN 81-7011-803-4